पंडित ऋषभजी के प्रवचन नंबर ६४ से प्राप्त क्लिप
श्री अष्ट पाहुड, बोध पाहुड गाथा १८-१९-२०
दिनांक – ०६-०३-२०२१
४१:३० मिनिट से ४४.३० मिनिट तक

विस्तार करे तो विषय मिलेगा उसको। विस्तार करेगा तो विषय में चली जाएगी। वो विस्तार नहीं करना, संकोच करना। और ज्ञान जो इंद्रियों के माध्यम से बाहर जाता था, उसको संकोच करके स्वरूप सन्मुख करना।

ये बहुत-बहुत बढ़िया procedure (विधि) सम्यग्दर्शन का, ये रहस्यपूर्ण चिट्ठी (में है)। (समयसार आत्मख्याति टीका की) १४४ गाथा में भी है। पर ये बहुत ही बढ़िया - **पश्चात्** और **तत्पश्चात्** वो, बहुत-बहुत मार्मिक प्रकरण है वो।

देखो! विजय जी! सन् १९७६ या १९७७, शायद जिस वर्ष युवा-फेडरेशन का गठन हुआ था गुरुदेव के सानिध्य में (जिसमें) एक-एक रुपये में हम लोग उसके जैन युवा-फेडरेशन के सदस्य बने थे सोनगढ़ में, उसकी एक रुपये fees (शुल्क) थी। और जब बना, जिस दिन बना था उस ही दिन, उस ही दिन ये रहस्यपूर्ण चिट्ठी के ऊपर, जो प्रवचन-मंडप है, जो आजकल सोनगढ़ में वो जो प्रदर्शनी बना दी है गुरुदेव की, उस हॉल में **लालचंदभाई** के प्रवचन ये रहस्यपूर्ण चिट्ठी में **पश्चात्** और **तत्पश्चात्** (का प्रकरण) उसपर हुए थे। तो प्रवचन के बाद पंडित लोग उनके पैरों में गिर गए (थे)। इतना मार्मिक प्रवचन उनका हुआ था उसपर।

और ये जो ब्रह्मचारी हैं न अभिनंदन जी, इन्होंने अपने टेप-रिकॉर्डर में उसको रिकार्ड किया था। पर दिया नहीं किसी को उन्होंने। वो कहते हैं (कि) दे देंगे, दे देंगे, दे देंगे (मगर) फिर दिया नहीं। फिर आखिर में ५-७ साल पहले मैंने फिर माँगा उनसे। तो कहें (कि) अब खो गया, वो पता नहीं कहाँ है अब।

इतना मार्मिक था! इतना मार्मिक कि पंडितों के आँसू झर गए। इतना जोरदार प्रवचन था। **लालचंदभाई** तो मतलब क्या (कि) जिनको गुरुदेव ने वहाँ, आपको पता है? परमागम मंदिर के पंच कल्याणक में भगवान के माता-पिता बने थे। और वहाँ मंच पर **गुरुदेव ने उनको निर्मल-दृष्टि से कहकर संबोधित किया था।** हाँ! **निर्मल दृष्टि। लालचंदभाई की दृष्टि निर्मल है**, ऐसा ४० हजार आदमी की सभा में (गुरुदेव ने) कहा था। समझ में आया?

इससे क्या शिक्षा लेना? अपने तो अपना काम (करना)। पदम् जी! अपना काम कैसे हो? ये तो चले गए अपना-अपना काम करके। हमारा काम कैसे हो - ये देखना है।